छत्तीसगढ़ के पहले क्रांतिकारी शहीद

वीर नारायण सिंह

लाल जोहार

दल्ली-राजहरा,
जिला दुर्ग. म.प्र.
शहीद चौक, केम्प नं.

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा.

प्रकाशक:-

छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ, दल्ली राजहरा
जिला दुर्ग (म. प्र.) 491228

मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस, बालोद

- भूमिका -

इस पुस्तक का यह दूसरा संस्करण है । पहला संस्करण १९७९ में निकला था । इस बीच, वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ के मजदूर - किसान - आदिवासियो के संघर्ष का प्रतीक वन गये हैं । जिस तरह झारखण्ड में महान बिरसा मुँडा ने ब्रिटिश साम्राज्य वाद के खिलाफ सशस्त्र सग्राम किया, उसी प्रकार वीर नारायण सिंह ने छत्तीसगढ़ में एक ओर सामन्ती साहूकारों और दूसरी ओर अग्रेज साम्राज्यवाद के खिलाफ हथियार बन्द लड़ाई की ।

अंग्रेज इतिहासकारों ने पुराने गजटों में नारायण सिंह को डकैत करार किया था । आजादी के बाद कुछ राष्ट्रीय इतिहास कारों ने नारायणसिंह की छवि सम्भालने का प्रयास किया । परतु दल्ली राजहरा के लोहा खदान मजदूरों ने सबसे पहले छत्तीसगढ स्तर पर वीर नारायण सिंह का नाम उजागर किया । १९७९ में रायपुर शहर में पहला वीर नारायण सिंह दिवस मनाने, करीब ३ हजार खदान मजदूर गये । रायपुर निवासी हैरत में पड़ गये और कहनें लगे 'कहां से आ गये ये हैल्मेट-बूट वाले' । अखबार नवीसों ने मजदूरों द्वारा आयोजित इस सम्मेलन के महत्व को एकदम नजरन्दाज किया । इस सम्मेलन में भाग लेने ३३ साल के काला पानी की सजा काटे पडित परमानंद जी, भगतसिंह के साथी मन्मथनाथ गुप्त और भगतसिंह के भतीजे आये थे ।

१९८० और १९८१ की १९ दिसम्बर को दसों हजार मजदूर-किसान, शहीद वीर नारायण सिंह दिवस मनाने के लिये बालोद में एकत्रित हुए। इससे लुटेरे शासक वर्ग का दिल दहल गया। फोरन शासक वर्ग वीर नारायण सिंह के प्रति अत्यधिक सवेदन शील हो उठा । शासक वर्ग मजदूरों के शब्दों और प्रतीकों को हडपने और इनको तोड़-मरोड कर विकृत कर, दुबारा मेहनत कशों के बीच बोने में माहिर होता है, तुरन्त मुख्य मत्री ने कोडार बांध का नाम वदल कर वार नारायण सिंह बांध रख दिया । एक इंजी नियरिंग कालेज भी वीर नारायण सिंह के नाम पर खोल दिया ।

शासकीय बुद्धि जीवियों ने वीर नारायण सिंह पर एक पुस्तिका भी तत्काल लिख डाली । वीर नारायण सिंह को सरकारी शहीद बनाने के चक्कर में, शासन लगातार अखबारी इश्तहारों के माध्यम से उनको याद करता रहा । यह वही सफेद पोश दलाल कांग्रेसी हैं जिन्होंने संजय गाँधी की तुलना शहीद भगतसिंह से की, और दोनों के फोटो को एक साथ रखा था । सोचिये तो कहां भगत सिंह और कहां संजय गांधी ।एक क्रांतिकारी दूसरा लुटेरा ।

यह वही कांग्रेसी हैं, जो आज महात्मा गाँधी का नाम लेकर गैर जिम्मेदार मशीनीकरण कर देश में बेरोजगार बनाने की मशीन लगा रहे हैं । यह वही सरकार है, जो महात्मा गांधी के आर्दशों का जाप करे, खुद सैकडो दारु के ठेके चलाती है । इन्ही कांग्रेसियों ने सरदार भगत सिंह को रुस का दलाल बुलाया था ।

इसी लुटेरे वर्ग ने ताम्रपत्र बांट कर तमाम स्वतत्रता सेनानियों का राष्ट्रीयकरण कर डाला । नारायण सिंह के एक वंशज मच्चुराम को पेंशन स्वंय इंदिरा गांधी ने तय की है ।

१९८२ में छत्तीसगढ़ माइंस श्रमिक संघ की प्रतिद्वंदता में लुटेरे वर्ग ने भी वीर नारायण सिंह दिवस मनाने की ठानी । वह भी खुद उदघोषित १० दिसम्बर को नहीं, परन्तु सी. एम. एस. द्वारा साल-दर-साल मनाये जा रहे १९ दिसम्बर को : महीनों पहले से कांग्रेसियों ने गांव गांव घूमकर खद्दर की टोपियों और कुर्ता-पजामों की घूस बांटी । बेरोजगार युवकों को दैनिक भत्ते पर दल्ली लाये शराब ठेकेदारों, जंगल ठेकेदारों, खदान ठेकेदारों, और तमाम लन्द-फन्द ठेकेदारों के ट्रकों में । प्रदेश के सत्ता प्रभु– मुख्य मंत्री अर्जुन सिंह खुद चांदी के गरुड– हेलीकाप्टर पर सवार हो शासकीय सम्मेलन को आशीर्वाद देने आये । एक ओर पुरी सरकारी मशीनरी थी । दूसरी ओर छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के नेतृत्व में हजारों लाखों किसान मजदूर थे ।

पर अफसोस– भाडे के टट्टू सफेद पजामा पहने हुए कांग्रेस सेवा दली- निरे पजामा निकल गये । सत्ताधारी पैसे के

बल पर चापलूसों का जमघट खरीद सके परन्तु शोषित जनता का दिल न जीत पाये ।

आज शासक वर्ग स्वतंत्रता सेनानियों को ताम्रपत्र बांट कर आजादी के मतवालों एवं क्रांतिकारियों के सपनो को चूर-चूर कर रहे हैं । शहीदों का सपना एक शोषणहीन समाज व्यवस्था स्थापित करने का था । पर आज की व्यवस्था का जड ही शोषण है । शोषण अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करने वालों को ही आज जेल में ठूंसा जा रहा है, या नक्सलो और उग्रपंथी करार कर गोली से उडाया जा रहा है । इसलिये शहीदों की कुर्बानी का फल हमें मिल नहीं पाया है । वीर नारायण सिंह का सपना अभी भी अपूर्ण है ।

दल्ली-राजहरा
दिनांक १९ दिसम्बर ८३

—अरविन्द गुप्ता

आज की पीढ़ी
और
वीर नारायण सिंह की वसीयत

शंकर गुहा नियोगी

सोनाखान के वीर शहीद नारायण सिंह की जन्म भूमि एवं कर्म भूमि एव वर्तमान में क्रान्ति की तीर्थभूमि, सोनाखान जाकर उनके परिवार से मुलाकात करने की जिम्मेदारी संस्था की ओर से मुझे एव सहदेव साहू को सौंपी गयी । सोनाखान वर्तमान में छत्तीसगढ के पूर्व की ओर रायपुर जिले की तहसील बलौदा बाजार में स्थित है । जंगलो के बीच एक आदिवासीबहुल गाँव है । कँवर, धनहार, बिझवार एव गोंड़ जाति के लोग इस बस्ती में रहते है । सोनाखान पंचायत भी है । सोनाखान पंचायत में भुसरी पाली, कसौंदी, महकम, बंगलापाली गाँव है ।

हम लोग रायपुर से बलौदाबाजार के लिए रवाना हुए । बलौदाबाजार के बाद कसडोल जाना था । कसडोल जाने के लिए विशाल महानदी को पार करते हमें परेशानियों का सामना करना पड़ा और इस तरह हम कसडोल पहुँचे । यह वही कसडोल है जहाँ के व्यापारियों के विरुध्द सन् १८५६ में शहीद वीर नारायण सिंह ने घोर संघर्ष किया था । आज आजादी के ३२ साल बाद भी वीर नारायण सिंह के परिवार के लोग नितान्त गरीबी में दिन व्यतीत कर रहे हैं, परन्तु वह व्यापारी घराना जिसने शहीद नारायण सिंह के सपनो को चकनाचूर करने के इरादे से वीर नारायण सिंह को कारागार में पहुँचा दिया था, आज भी कसडोल में गगनचुम्बी इमारत बनाकर इठला रहा है तथा गरीब किसानों का बेरहमी से शोषण कर रहा है । इस व्यापारी घराने के लोग आज कांग्रेसी सफेंदपोश नेता बने हुए है ।

सोनाखान जाने के लिये कसडोल होकर ही जाना होगा । हम अपनी यात्रा जारी रखते हुए सुनसान रास्ते से गुजरते हुए कसडोल से आगे निकल पडे । सामने जोंक नदी मिली जिसे पार कर हम दक्षिण की ओर चल पडे, कुछ दूर जाने के पश्चात्

जंगली क्षेत्र प्रारंभ हुआ। अचानक एक स्थान पर हम चलते-चलते ठिठक कर रुक गए। हमने देखा कि वह जगह गिडोंला के पास थी, हमें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे इस क्षेत्र में पत्थरों की वर्षा हुई है, हमारी दृष्टि जहां भी गई उस ओर पत्थर ही पत्थर दृष्टिगोचर हुए। जहां देखो पत्थर ही पत्थर, छोटे - बडे, मझोले, पडे दिखे। हमें ऐसा लगा कि वीर नारायण सिंह की अवाज गूँज रही है- "ठहरो !" देखो जो पत्थर तुम पडे हुए देख रहे हो उन्ही पत्थरों से हमने संघर्ष शुरु किया था १२५ साल पहले- जमाखोर एवं अग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ। आज भी वही शोषक वर्ग मौजूद है। देखते क्या हो, उठाओ पत्थर हमारा अधूरा संघर्ष, पूर्ण विजय की मंजिल तक ले जाने की जिम्मेदारी तुम पर है। भूलो मत नौजवान, नया जमाना बनाने की जिम्मेदारी तुम पर है।

हम गिंडोला गांव को पार कर सोनाखान के लिए अग्रसर हुए। रास्ते में हम उस महान क्रांतिकारी वीर को अपने साथ महसूस करते रहे। हमें ऐसा लगा जैसे उस क्षेत्र की हवा, झाड, झरिया क्रांतिवीर के महान संग्राम के मूक दर्शक, आज अचानक महाकोलाहल कर इतिहास की गाथाए सुनाने के लिए तत्पर हैं। छत्तीसगढ के अन्य जगलों से सोनाखान का जंगल भिन्न नहीं ह। वहां भी सागौन, बीजा, कर्रा, सेन्हा, बेल, आंवला आदि वृक्ष हैं। बीच में एक बनग्राम अर्जुनी है। अर्जुनी पहुंचकर पहली बार हमने शहीद बीर नारायण के नाम से आम किसानों से पूछ-ताछ की। एक गरीब किसान से मैंने पूछा- 'नारायण सिंह का नाम सुने हो का जी?" इस पर उस गरीब किसान ने अपनी मद्धिम आवाज में उत्तर दिया- हम नई जानन।

मैंने फिर पूछा- 'देश बर परान निछावर करैइया महान लडाकू नेता के नाम नइ सुने हव तुमन ?' उत्तर मिला- 'अरे, वोहर तो वीर नारायण सिंह रिहिस हावे, वो हा'। उस इलाके में नारायण सिंह को लोग वीर नारायण सिंह के नाम से ही जानते हैं। फिर मैंन जहां-जहां भी वीर नारायण सिंह के बारे में पूछ-ताछ की सब जगह काफी भोड जमा हो जाती। लोगों के मन में मैंन एक नया उत्साह देखा, वो सब, कुछ न कुछ बोलने

को तत्पर थे, वीर नारायण सिंह के संग्राम के बारे में कहना चाहते थे। वे इतिहास के बारे में अशिक्षित होने के कारण अनभिज्ञ थे और अधिक बोल नहीं सके, परन्तु भीड़ में खडे लोगों की मूक आँखें देखने से ऐसा लगा जैसे वीर नारायणसिंह के इतिहास के पन्ने पलटते चले जा रहे हैं। उन पन्नो में वीर नारायणसिंह की कुर्बानी की गाथा हमें पढ़ने को मिली। आदिवासी किसानों का आँखें जैसे जल–जल कर आँखों में प्रतिफलित हो रही हैं–एक क्रान्ति का इतिहास सामन्तवाद एव अंग्रेज साम्राज्यवाद के खिलाफ एक जीवन-प्रण संग्राम की वीरगाथा ।

सबेरे आठ बजे हम सोनाखान पहुँचे । गाँव के आम किसान उस समय खेत खलिहान चले गये थे । एक-दो आदमी चलते-फिरते नजर आये । उन्हे बुलाकर हमने उनसे पूछा,वीर नारायणसिंह के बारे में हम जानकारी लेने आये हैं, क्या आप लोग हमें बता सकते हैं ? उनमें से एक ने कहा – क्यों नहीं– जरुर बतायेंगे । और, फिर इस बीच वहां पर लोग एकत्रित होने लगे । मैंने देखी वही भीड़ । वही आँखें । गांव के लोग हमें वीर नारायणसिंह का जहां घर था, वहां ले गये । आज वहां पर सोनाखान के जमींदार का महल नहीं है किन्तु, वहां पर निशान के रुप में खडहर बचा हुआ हैं । कुर्रुपाट पहाड़ के नीचे जंगल से लगा हुआ माई घर का खड-हर लबाई में १० हाथ एव चौडाई में ६ हाथ है, बाजू में नीम और इमली के पुराने वृक्ष हैं जो आज भी खडे हुए अपनी टहनियों को हिला कर हवाओं के द्वारा वीर नारायणसिंह का सन्देश सुना रहे हैं । माई घर के पूरब में १५ हाथ की दूरी पर वीर नारायण सिंह जमींदार के सोने, खाने, पकाने के कमरे हैं जो खडहर के रुप में मौजूद हैं। इसकी लम्बाई २५ हाथ, चौडाई ६ हाथ है बाजू में आम, ईमली, कलमी के वृक्ष है इसके पूरब में बैठक घर के खडहर की लम्बाई ८ हाथ एव्रं चौड़ाई ६ हाथ है बाजू में कसही वृक्ष है।

सोनाखान जमीदार के महल का बस यही अवशेष है जो अब तक बचकर आज तक टिका हुआ है। ४९ गाँव के जमीदार

का यही महल था? मैंने गांव वालों के विचार जानने हेतु उनसे पूछा। गाँव वाले तपाक से बोले- वह शोषण नहीं करते थे। उनका रहन-सहन सीधा था। इनका घर बाँस का बना हुआ था जिसे छत्तीसगढी में भदरी कहा जाता है। बांस की दीवारों में मिट्टी की छबाई की गई थी, छत खपरे की थी। मैंने फिर गांव के लोगों से प्रश्नों की बौछार शुरु कर दी। क्या आपको ४९ गांव के नाम मालूम है? रानी का नाम मालूम है? गांव में कोई १०० वर्ष का वृद्ध व्यक्ति जीवित हैं? गांव वाले बोले- यह बात तो पुरानी हो गई है फिर भी कुछ खबर आपको फुलवाडी के जगपाल सिंह से प्राप्त हो सकती है'

मैंने फिर प्रश्न किया- इस पहाड का क्या नाम है? गांव के पश्चिम में स्थित एक छोटा सा पहाड। पहाड़ का नाम कुरुपाट डोंगरी है। यह वही डोंगरी है जहां वीर नारायण सिंह " कुर्रुपाट देवता की पूजा करते थे "। कुरुपाट की महत्ता यह है कि वहां एक छोटी सी जगह पर बारहों महीने पानी मिलेगा। पहाडी के उपर कुरुपाट के पास का वह स्थल बड़ा ही मनोरम, बडा सुन्दर है। कुर्रुपाट, बिंझवार जमीदार के राज देवता हैं। गांव वालों ने बताया कि आज भी दशहरे उत्सव के दिन पुराने १८ गांव एवं नये बसे गांव के लोग कुर्रुपाट में पूजा के लिए आते हैं। गांवों के नाम इस प्रकार हैं– (१) सोनाखान (२) महकम (३) बगलापाली (४) सारसडोल (५) संडी (६) बासीनपाली (७) नयागांव (८) देवतराई (९) मीरगोंदा (१०) पठियापाली (नया) (११) बिरकुली (१२) वनपिया (१३) चिखली (१४) सालिहामार (१५) जागीभाट (१६) कोहाकुडा (१७) चनहार (१८) भुसरीपाली (१९) कौंसदो (२०) शुक्ला भाटा। ये गांव हैं– जिन गांव के आदिवासी किसान, नारायण सिंह की एक आवाज में जमा हो जाते थे। १८५६–५७ की महान क्रान्ति के दिनो में इन्ही १८ गांव के किसानों ने अत्याचार सहे थे एव प्रतिरोध किया था। इन्ही १८ गांवों के किसानों का खून सोना-खान के विस्तृत भूखड में चू-चू कर गिरता रहा। बहादुर किसानों नें एक आजाद सोनखान का स्वप्न देखा था एव शोषक, अत्याचार

हीन समाज व्यवस्था की कल्पना की थी । क्या आज उन १८ गांवों के किसानों के स्वप्न साकार हो गये हैं ? क्या उन १८ गांवों में एक शोषणहीन समाज व्यवस्था स्थापित हो गई ? कुरुपाट के देवता के सामने दशहरा के दिन पूजा करते समय आज के किसान क्या एक शोषणहीन समाज की स्थापना के लिए शपथ लेते हैं ? बहुत सारे सवाल मेरे दिमाक में घूमते रहे ।

कुरुपाट से देखो तो सोनाखान की पूरी बस्ती दिखाई देती है– सोनखान के चारों ओर पहाडी ही नजर आती है । कुरु-पाट डोंगरी के पश्चिम में लगा हुआ है पहांड़- सुपकोण एवं बहेरा खोल (खोल जगल) सामने पूरब की ओर बिलाईगढ वन क्षेत्र, लामी डोंगरी, सराईपाली डोगरी, काठाखलोया डोंगरी, मंझला मंडला और अन्य छोटे-छोटे पहाड़ । किंवदन्तियां अनेकों हैं ।

कुरूपाट डोंगरी में ही वीर नारायण सिंह ज्यादा समय रहते थे । उनके पास एक कबरा घोड़ा था । वो अक्सर घोडे पर सवार होकर गांव-गांव घूमा करते थे । किसानों के दुख दर्द सुना करते थे, समस्याओ का हल बताते थे और उनकी यथाशक्ति मदद भी किया करते थे । आज भी वहुत से लोग कहते हैं कि उन्होंने अब भी वीर नारायण सिंह को कबरे घोडे पर सवार होकर घूमते हुए देखा है' । मैंने उन व्यक्तियों से पूछा- क्या तुममें से किसी ने नारायण सिंह को घोडे पर सवार देखा है । 'नहीं हमन नई देखे हावन' । कुरुपाट डोंगरी वीर नारायण सिंह की गाथाओं का जिन्दा इतिहास है । एक जगह पर सरकारी विभाग द्वारा कुछ खुदाई हुई है । 'यहां मुरकुट्टी ढेंकी घलोक हावे' यह मुरकुट्टी ढेंकी क्या चीज है– मैंने पूछा : इस पर उस वृद्ध ने जवाब दिया–

वीर नारायणसिंह डरपोक आदमी को सहन नहीं करते थे । और अगर कोई व्यक्ति क्रांतिकारी वीर के पास आकर रोना गाना करता था कि मुझे फला बदमाश साहूकार ने सताया है, तो वे नाराज हो जाते थे एवं मुरकुट्टी ढेंकी में उसे सजा देते थे । और अगर कोई आकर उनसे ये कहता कि मैंने फलां. बदमाश को मार

भगाया, या किसी अंग्रेज अफसर को चाटें रसीद करे हैं तो ये सुनकर नारायण सिह खुश हो जाते और खुशी से उस आये हुए व्यक्ति की पीठ ठोंकते और इनाम भी देते थे । आज भी दशहरे के दिन वीर नारायण सिह पहाडी से आवाज देते हैं। ग्रामवासियो के दिल में आज भी वीर नारायण सिह जिन्दा है । विभिन्न प्रकार की क्विदन्तियां प्रचलित हैं ।

कुर्रुपाट से देखने पर गांव एक तस्वीर जैसा नजर आता है । उत्तर पूर्व दिशा में दो बडे २ तालाब एक का नाम राजासागर (४ एकड़) और दूसरा रानीसागर (३ एकड) की भूमि में जल की लहरें अठखेलियां कर रही है । गांव के दक्षिण में एक और तालाब नन्दसागर है । यह तालाब भी वीर नारायण सिह ने खुदवाया था । और इस तालाब के किनारे वीर नारायण सिह ने खुद अपने हाथों से वृक्ष रोपण किये थे जो आज भी हमें, आम, नीम, आदि वृक्ष हरे भरे नजर आते हैं । राजा इसी तालाब में नहाया करते थे ।

आज यहां बस्ती बनी हुई है । पुरानी बस्ती वहां नहीं थी । बस्ती तालाब से लगी हुई थी । महकम बस्ती एवं सोनखान बस्ती एक साथ लगी हुई थी । अंग्रेजों ने १८५७ के दिसम्बर महीने में इन्ही दो बस्तियों के उपर हमला एवं अत्याचार किया था । यह इतिहास और वीर नारायण सिह की वीरता पूर्ण संघर्ष का इतिहास, इतिहासकारों की विश्वघातकता के बावजूद एक पीढी से दूसरी पीढो को मालूम होता रहा और यह सिलसिला शताब्दियों तक चलता रहेगा । अंग्रेजों ने इस बस्ती को तीनों ओर से घेरकर आग लगा दी थी और बस्ती के बच्चों को पकड़ पकड़ कर दहकते हुए अंगारों में डाल दिया था । अधाधुध गोली चला कर सैंकडो लोगों को मौत के घाट उतार दिया था तथा बलात्कार जैसे कुकर्म भी करने से नहीं चुके । बस्ती खाली हो गई । गांव के लोग दूर दूर तक जंगल ओर पहाडो को पार करते हुए भाग खडे हुए थे । परन्तु गांव के लोग उन अत्याचारों को महत्व नहीं देते

हैं । वे वीर नारायण सिंह के संघर्ष को ही याद करते हैं । ग्राम वासियों के आंसू सूख गये हैं । आज की पीढ़ियों में भी वह दुख, घृणा और गुस्से में परिवर्तित होकर रह गया है । फिर मौका आयेगा– फिर नारायण सिंह आयेगा, फिर संघर्ष शुरु होगा एवं विजय के बाद वीर नारायणसिंह का राज कायम होगा – एक शोषण अत्याचारहीन नया राज । आज वहाँ अंग्रेजी साम्राज्यवाद नहीं है । अंग्रेजो साम्राज्यवाद के मुनीम–कसडोल के साहूकार परिवार, जिनके पास वीर नारायणसिंह अकाल के दिनों गरीब किसानों के लिए अनाज मांगने गये थे, जिन साहूकारों के खिलाफ वीर नारायणसिंह ने संघर्ष किया था, वही मिश्रा परिवार के लोग आज काले अंग्रेजों की तरह है । साम्राज्यवाद के मुनीम बनकर कांग्रेसी राज्य चला रहे हैं । वही साहूकार परिवार के लोग आज भी राजसत्ता पर कब्जा किए हुए हैं । इस परिवार के लोगों ने वीर नारायणसिंह का नाम मिटा देने की जी तोड़ कोशिशें की । गांव के लोगों ने साहूकार परिवार के अत्याचारों से पीड़ित होकर फिर नारायणसिंह को याद किया । कुछ लोग ददरिया के सुर में गुनगुनाने लगे –

चना के खेत मा बटोर ढुल जाय ।।
सोनाखानिया के मारे मिसिर ढुल जाय ।।।

गाना गाने वालों को मिश्र परिवार के लोगों ने डरा धमका कर रोक दिया । नारायणसिंह से संबधित गाना गाने से उन्हें मनाकर दिया गया है । आम जनता को उनके संघर्ष की कहानी बताने पर रोक लगा दी गयी । फिर भी सोनाखान के बहादुर आज भी सामन्त शाही मशीनरी के लिए एक चैलेंज के रुप में खडे हैं ।

शोषक वर्ग आज भी सोनाखानियों की याद से कांप उठता है । १९६७ में जब उत्तरी बंगाल के नक्सलवादी में जब बसन्त की जोरदार गूंज उठी । फिर यहां शोषक वर्ग कांप उठा । सोनाखान के बाजू में जांजगीर क्षेत्र के आदिवासी, हरिजनों का इलाका हैं । कुछ करना चाहिए, आग फिर भड़क सकती है । अभी से सम्हालो ।

क्षेत्र में पानी की मांग पुरानी है । परन्तु नहीं–सोनाखान में नहीं । बहुत बार ग्राम वासियों की तरफ से मांग करने के बावजूद भी एक बांध के लिए सरकार ने दो लाख रुपया पास नहीं किया । नारायणसिंह के गांव से आज भी बदला लिया जा रहा है । परन्तु बाकी क्षेत्र में पानी के बन्दोबस्त के लिए प्लान बनाये जा चुके हैं । एस्टिमेटेड कास्ट १० करोड़ की जोंक नदी के डाईवर्सन स्कीम बनी। काम भी सन् ७० से चालू है । अभी तक डाईवर्सन क्यों नहीं बन पाया, मैंने अर्जुनी के एक ओवरसियर साहब से पूछा तो उन्होंने कहा समूचे देश में लोग चुनाव के लिए व्यस्त हैं । इसलिये काम रुका हुवा है, और दो-तीन साल लग जायेगा । इसके पश्चात मैंने गांव के व्यक्तियों से पूछा इतने दिनों से डायवर्सन स्कीम बन नहीं पाई, गांव के लोग बोले जानवर को आड़ लेके बगुला चर जाते हैं

यहां डाइवर्सन की आड़ लेके एस.डी.ओ, ओवरसियर चर खा रहे हैं । तिवारी साहब यही काम करावत करावत लाखों के पूंजी कमा डारिस कौन का करे सकही, कुछु बोलो तो काम ले निकाल देथे । मेरे पूछने पर कि क्यों अब तुम्हें जानवर मारने कि इजाजत नही है उन्होंने कहा कि जानवर मार नही सकते नारायण सिंह के जमाने में जानवर मारने में कोई मनाही नही थी । नारायण सिंह खुद शिकार खेलते थे, पूरी बस्ती के लोग हांका में जाते थे । शिकार में जो भी प्राप्त होता था, उसमें हांका मे जाने वाले व्यक्तियों का बराबर का हिस्सा होता था । भाटा जमीन में कोदो कुटकी, खेराही (एक प्रकार के सांवा) जाति का अनाज आदि होता था । उडद भी खूब होता था । नाला के बहाव वाले खेतों में धान की खेती की जाती थी । आदिवासी खेत में काम करते थे और अनाज उत्पादन करते थे । गाय, भैंस, बकरी आदि जानवरों का पालन पोषण करते थे ।

वीर नारायण सिंह की जरुरत है क्या ? मेरे इस प्रश्न पर गांव वालों की आंखों में एक नई चमक उठी और कहने लगे हां अब हमनला वीर नारायण सिंह बने बर लगही । हमन एक्को दिन वीर नारायण सिंह वन जाबो जंगल में एक पंछी फड़फडाते हुए बोल उठा टिं–टीं–टीं–टीं–टीं---- ।

मिसिर तोर का गति हो ही ।
सरकार तोर का गति हो ही ।।
वीर नारायण सिंह आही ।
वीर नारारण सिंह आही ।।

अर्जुनी ग्राम पार कर आप भुसरीपाली जायेंगे । भुसरी पाली के बाद सोनाखान । आज सोनाखान में ४०-४५ की एक बस्ती है, सामने कुर्रुपाट डोंगरी और बाजू में जंगल । जंगल के बीच कल कल बहती हुई जोंक नदी। जगली जानवर आज भी हैं- सांभर, चितल, खरगोश, शेर, चीता, कोटरी और हां यहां आपको मयूर भी मिलेंगे । जंगली जानवर के नाम पर सोनाखान के पालतू जानवर बाकी छत्तीसगढ़ के पालतू जानवरो से अच्छी नस्ल के है। जंगलों में दूर-दूर तक हरी-हरी घांस नजर आती है । नारायणसिंह के पूर्वज गोंड़ जाति के थे । बताया जाता है कि इनके पूर्वज सारगढ़ के जमींदार के वश के हैं । गोंड मारु के डर में इनके पूर्वजों ने गोंड से बिझवार जाति में जाति परिवर्तन किया । उन दिनों दिल्ली में पठानों का राज था । वर्तमान महाराष्ट्र के चांदा जिला से लेकर वतमान उड़ीसा सम्बलपुर कालाहंडी तक गोंड़वाना में आता में था । जबलपुर मंडला के राजपरिवार गोंड़ वंश का था । पठान सेनापतियों ने चांदा जिला के कुछ गोंड़ राजाओं पर हमला कर दिया, बाद में गोंड राजाओं ने धर्म परिवर्तन कर ईस्लाम धर्म अपना लिया । उनके राज्यों के शासन का भार धर्म परिवर्तित गोंडो को वापिस कर दिया गया । मुसलमान बने हुए गोंड़ राजाओं के साथ गोंड़वाना के अन्य गोंडो की खूब दुश्मनी चली । धर्म परिवर्तित गोंड़ राजाओं ने उन दिनों खूब अत्याचार किए । धर्म परिवर्तित गोंड़ राजा उन दिनों 'गोंड़मारु' के नाम से विख्यात थे ।

बताया जाता है कि नारायण सिंह के पूर्वज सारंगढ़ में आए 'विशाही ठाकुर' सोनाखान जमींदारी वंश के पूर्वज थे । फते नारायण के समय में अंग्रेजों का कब्जा नहीं हो पाया था। नारायण सिंह के पिता का नाम राम राय था । नारायण सिंह के पास करीब ७० गांव का कब्जा था । उन गांवों के नाम इस प्रकार हैं–

१- उपरानी २- तिलाई पाली ३- दलदली ४- गिडोला ५- कासी पठार ६- खोकसा(खोसरा) ७- महराजी ८- महकोनी ९- नरधा १०- घोघरा ११- जकडी १२- अर्जुनी १३- सूखापाली १४- हरदी १५- मंडला १६- तेंदूदहरा १७- गाड़ाडिह १८- सेहर-जोर १९- कासीबहार २०- घरजरा २१- बाराद्वार २२- बारानडिह २३- सोनाडिह २४- पचपेडी २५- वोहिमदा २६- दोरी २७- कुरु-भाटा २८- तनाई २९- तिवाली ३०- केरो पुवा ३१- परसकोल ३२- कोदोमाल ३३- घनोरा ३४- पुराई पाली ३५- देवगढ़ ३६- तेंदुचुवा ३७- जमघा ३८- देवपुर (छोटा) ३९- देवपुर (बड़ा) ४०- नवागांव ४१- सुफलापारा ४२- कोरी ४३- नरी ४४- सराई पाल ४५- वघमला ४६ सिरमाल ४७- मलुवा (छोटा) ४८- मलुवा (बड़ा) ४९- चीता पडरिया इसके छोड बाकी १८ गांव और जिसका हम पहले उल्लेख कर चुके हैं वह भी सम्मिलित हैं ।

अंग्रेजी साम्राज्यवाद देशी राजा व जमींदारों के ऊपर भरोसा नहीं कर पा रहा था । और वही तमाम राजाओं को दुश्मन बनाना चाहता था। साम्राज्यवाद एक नया चाल चला । एक नये देशद्रोही दलाल वग को ढूंढ निकाला। यह वर्ग था महाजन वर्ग। साहूकारों ने अग्रेजों की मेहरबानी से समूचे देश में अपना जाल बिछा दिया । जमाखोरी, ब्याज का धन्धा आदि से यह साहूकार वर्ग के लोग दिन दुगुना रात चौगुना बढ़ते गऐ । पहले गांव में अनाज जमा रहता था । परन्तु इन साहूकार वर्गों के चलते अनाज गायब होने लगा । सूखे की आड़ लेकर साहूकार वर्ग भयंकर शोषण करते थे । महाजन (साहूकार) वर्ग के आते ही गांव-गांव में अकाल पड़ने लगे । एवं गरीब किसान भूख मे तड़फने लगे । कसडोल का मिश्र परिवार भी महाजन परिवार थे । महानदी के किनारे बसे कस्बे जैसे ग्राम कसडोल चारो तरफ से हरे भरे थे । ऊपरी भाग के मेहनती हरिजन (सतनामी) किसान जमीन में मेहनत कर सोना जैसे धान उगा रहे थे, दूसरी तरफ जंगली क्षेत्र में भोले भाले कवर गोंड़ बिझवार, धनवार आदि आदिवासी जंगल की उपज और खेत खलिहान के धान आदि पर जिन्दा थे । दुर्गम होने के बावजूद भी

महाजन परिवार मिश्र के लोग इस क्षेत्र को खूब पसंद किया। महाजनी धन्धा जोर शोर से शुरु किया। ब्राम्हण होने के नाते इस परिवार को स्वीकृति मिली इससे शोषण जाल फैलाने में इनको काफो मदद मिली उपज होते ही मिश्रा के आदमी सस्ती कीमत में अनाज खरीद लिया करते थे। इन्होंने ब्याज का धन्धा चालू किया बैल बर्तन एवं जमीन जायदाद भी गिरवी में रखकर चक्रवृद्धि ब्याज के धन्धा के जरिये बहुत जल्द ही यह परिवार इस क्षेत्र में अव्वल नम्बर का शोषक बन गया।

१८५६ में उस क्षेत्र में भयंकर सूखे के कारण आकाल पडा। जंगल के जानवर भी सूखा पड़ने से जंगल छोड़कर भाग गये। पहाडी क्षेत्र में कंदमूल भी मिलना दूभर हो गया। सोना खान राज के लोग अनाज के बिना त्राही त्राही करने लगे। सोना खान में नारायण सिंह की बैठक में सब एकत्रित हुए और सब एक आवाज में बोल उठे कैसे करें? गांव छोड़कर भाग जाए या दूसरा रास्ता भी है। छत्तीसगड़ पर अग्रेजों का कब्जा ३ साल पहले से चल रहा था। अंग्रेज कमिश्नर इलियेट ओर स्थिम थे। कसडोल के मिश्र परिवार के उपर अंग्रेजों की कृपा दृष्टि थी। सोनाखान की बैठक में तय हुआ कि कसडोल के महाजन मिश्रा परिवार से कर्ज में अनाज मांगा जाय। कुछ ब्याज भीं दिया जायेगा। वैसे बताया गया कि मिश्र परिवार के लोगों के मुह से अकाल की समस्या देखते ही पानी निकल रहा था। अकाल के स्थिति में ज्यादा ब्याज व अधिक मुनाफे के लालच में, मिश्र परिवार ने नारायण सिंह की बात पर अनाज देने से साफ इंकार कर दिया। परन्तु कोई हल नहीं निकला। महाजन के कोठे में रखा अनाज सूखने लगा और इधर जनता का पेट भी बिना अन्न के सूखता रहा। सोनाखान स्थित नारायण सिंह कीं बैठक में गांव गांव के मुखिया जुटते गये। बातचीत चलती रही, नारायण सिंह बोले- नहीं, भूख से कोई आदमी नही मरेगा भले ही लड़ाई के मैदान में जूझते प्राण क्यों न चले जायें। नारायण सिंह ने उपस्थित लोंगों से पूछा क्यों तुम लोग लड़ने तैयार हो या नहीं। जवाब मे उपस्थित लोग एक

स्वर में बोल पडे, लड़बोन–लड़बोन और ये आवाज इतनी तेज थी के सारे पहाडी इलाकों में तथा जंगलो में यही आवाज गुंजने लगी, तथा गांव गांव में पहुचने लगी । लोग सोनाखान पहुचने लगे । कुरूपाट में नारायणसिह का डेरा था । कुरूपाट का पानी पीकर सरदारों ने शपथ ली कि अब हम साहूकारों को सहन नहीं करेंगे । साहूकारों की कोठी के अनाज में आदिवासी किसानों की मेहनत का खून लगा हुआ है । लहू पसीने की कमाई से पैदा हुआ अनाज महाजन की कोठी में भरा हुआ रहेगा और हम भुख से तड़फते रहेंगे, ये कभी नहीं हो सकता । नारायणसिह की आवाज कुरूपाट में व आसपास के क्षेत्र में गूंजनें लगी । लडेंगे कि नहीं एक बार फिर नारायणसिह नें मुखिया साथियों से पूछा, सभी एक आवाज में चिल्ला उठे 'लड़बोन' और फिर जोश में आकर नारायणसिह के नेतृत्व में लोग चल पडे कसडोल की ओर। १८५६ का साल था नारायणसिह अपने कबरे घोडे पर सवार होकर नेतृत्व सम्हाला । लोगों के साथ नारायणसिह कसडोल पहुचे, फिर एक बार कसडोल के ब्राम्हणों से कर्ज के रुप में अनाज मांगा । मिश्रा लोग अंगूठा दिखा दिया । नारायणसिह से अब सहा नहीं गया । कोठी के धान को नारायणसिह ने जब्त कर लिया और ग्रामवासियों के बीच जरुरत के आधार पर बांट दिया । सन् १८५६ साल की यह घटना एक क्रांतिकारी घटना थी । आर्थिक मांगों पर अनाज के लिये संघर्ष की जो मिसाल छत्तीसगढ़ की दूर एव दुर्गम गांवों में नारायणसिह ने शुरू की उसकी मिसाल इतिहास में दुर्लभ है ।

यह था जनता के लिए, जनता द्वारा संग्राम, जिसका नेतृत्व दिया था सोनाखान के आदिवासी नेता वीरनारायणसिह ने । नारायणसिह ने अंग्रेज शासकों को बाद में खबर भी दे दी । व्यापारी मिश्र ने भी अपनी क्षति का पत्र डिप्टी कमिश्नर को भेजा ।

अंग्रेज कमिश्नर इलियट ने व्यापारी का भेजा हुआ शिकायत पत्र प्राप्त होते ही एक फौज की टुकडी के साथ नारायण सिह के नाम से वारन्ट भेज दिया । परन्तु फौजी टुकडी धोखा देकर ही नारायणसिह को रायपुर ले जाने में सफल हुई । १८५७ का

साल सारे देश में सिपाही गदर की आग जल रही थी । बंगाल की बैरकपूर से आग की चिनगारी भड़की । झांसी की रानी, तात्या टोपे, नाना साहेब आदि ने सिपाही गदर का नेतृत्व सम्हाला । रायपुर के जेल में बैठकर वीर नारायण सिंह का दिल भी इस गदर में भाग लेने के लिए-अंग्रेज साम्राज्यवाद को देश से भगाने के लिए आन्दोलित हो उठा । वे मौका पाकर जेल से भाग निकले फिर सोनाखान । सोनाखान नाम इसलिए सोनाखान पडा क्योंकि सोनाखान की प्रवाहमान जोंक नदी एव पहाडी नाले झरिया में सोने के कण मिलते हैं । सोनाखान नारायण सिंह के स्वप्न का सोनाखान हम झरिया पार कर गजपालसिंह के डेरा पहुँचे ।

नारायण सिंह को अनाज लूटने के आरोप में बन्दी बनाया गया था । सोनाखान चुप नहीं बैठा था । सोनाखान और १८ गांव के आदिवासी किसान गुस्से से तमतमाते रहे ।
जब नारायण सिंह आ गये तो गांव–गांव के आदिवासी अपने नेता को देखकर खुशी में दृढ़ निश्चय के साथ फिर सगठित हुए । विद्रोह का नगाड़ा गांव–गांव में बजने लगा ।

बैठक हुई ; नारायण सिंह के नेतृत्व में लोगों ने अंग्रेज साम्राज्यवाद के खिलाफ फिर से सग्राम के लिये इरादा बनाया । सिपाही गदर के इतिहास में छत्तीसगढ़ भी जुड़ गया । छत्तीसगढ़ के इतिहास में आदिवासीयों के टपकते खून का इतिहास, देश को मुक्त करने का इतिहास, मुक्ति संघर्ष की शुरुवात का इतिहास। अंग्रेज भी चुप नहीं बैठे । उन्होंने भी अपनी तैयारियां की । इतना बताकर गजपाल सिंह ने दम लिया । गजपाल सिंह लाल मुच्चु इतने में गुड की बनी हुई लाल चाय लेकर आये । मुच्चु नारायण सिंह का दूसरा लडका और गम्भीर सिंह का नाती है । अभी उमर करीब ६० साल है । मुच्चु जी ने हमें बताया कुछ कागजात हमारे पास है ।वो एक टूटी हुई लकडी की पेटी लेकर आये । पेटी में दीमक लगी हुयी थी । हमने कुछ पुरानी चिट्ठियों की कापियां देखी । गजपाल सिंह तब तक एक भरमार बन्दूक नुमा लोहे की नली लेंकर आये । यह बन्दूक थी..... इन बन्दूकों को लेकर वीर नारायण सिंह अंग्रेजों

कें साथ लड़ते रहे । कुरुंपाट डोंगरी से चढ़कर जब तक वीर नारा-राय सिंह की फौज की बन्दूक गरजती रही, अंग्रेज फौज की टुकडी को बडी कठिनाई का सामना करना पड़ा । 'और बन्दूकें नहीं हैं? मैंने गजपाल सिंह से प्रश्न किया । गजपाल सिंह उत्तर में बोले कोई कोई गांव में होगी । कुछ बन्दूक की नली को तो बैलगाडी के एक्सिल के काम में भा लगाया गया है । सहदेव ने फिर प्रश्न किया 'बताइयें लड़ाई की खबर । लड़ाई के नाम से हमारे साथ बैठे ग्रामवासियों की भीड़ की आंखें फिर चमक उठीं । एक आदिवासी अधेड़ व्यक्ति (कवंर) बोल उठा । मैं बताऊंगा 'लड़ाई की कहानी' विभीषण बिना रावण को हराना मुश्किल था, उसी प्रकार जमींदार घरानों ने नारायण सिंह को दगा दिया । किसान युध्द की पीठ में चाकू भोंका, एक मात्र सम्बलपुर के क्रांन्तिकारी सुरेन्द्र साय को छोडकर बाकी सभी जमींदारों ने अग्रेजों का साथ दिया नारायण सिंह के सगे बहनोई ने भी ।

देवरी के जमींदार ने नारायण सिंह के सगे बहनोई होने के बावजूद भी अंग्रेजों का साथ दिया था । बिलासपुर के जमींदार ने फोज भेजकर अंग्रेजों की मदद की । भटगांव एव बिलाईगढ़ के जमींदारों ने भी अग्रेजों की विभिन्न प्रकार से मदद की । नारायण सिंह के एवं किसानयुध्द के दुश्मन ज्यादा ताकतवर नहीं थे, परन्तु जमींदारों के विश्वासघात के कारण इतने बडे संघर्ष को पराजय झेलनी पडी । इस विश्वासाघात का माकूल जवाब दिया गोविन्द सिंह ने । वर्तमान उड़ीसा में सम्बलपुर के महान क्रान्तिकारी वीर सुरेन्द्र साय के मार्गदर्शन एवं फौजी सहायता से बलवान होकर वीर बाप के बेटे गोविन्द सिंह ने गद्दारो का बदला लिया । देवरी के जमींदार महराज साय को गर्दन तलवार की एक वार से काट दी मैंने फिर पूछा–'क्या नारायणसिंह के साथ कसडोल के ब्राम्हणों की कोई व्यक्तिगत दुश्मनी थी । ' गजपालसिंह बोले–'कौन जानता है क्या था ? पर उनकी बात बिलकुल सत्य है कि अकाल पीड़ित किसानों के लिए अनाज दिलाने हेतु संघर्ष में उन्होंने पहले नेतृत्व दिया था । जेल तोड़ने के पश्चात वीर नारायणसिंह ने सिपाही गदर के समय एक तरफ अंग्रेजों का राज खत्म करने का विचार

ठान लिया था। साथ-साथ साहूकार वर्ग के खिलाफ, तीव्र घृणा के कारण, कोटगढ़ एव खरौद जाकर मिश्र परिवार के लोगों को खत्म कर नये संघर्ष की शुरुवात की थी। सिर्फ बच गई थी मिश्र परिवार की एक गर्भवती महिला और साथ में उसका एक पुत्र।

साथी सहदेव ने फिर पूछा – 'कुर्रुपाट की आखरी लडाई का क्या हुआ ?' उदास होकर मुच्चु बोला – अंग्रेज सिपाहियों के साथ लडते-लड़ते वीर नारायणसिंह की गोला-बारुद खतम हो गई। आधुनिक शस्त्रों के साथ देहाती शस्त्रों का मुकाबला न हो सका। वीर नारायणसिंह पकडे गये। उनको पकड़ कर एक, साथी के साथ अग्रेज लोग उनके ही कबरे घोड़े में बैठाकर रायपुर ले गये। सोना खान गांव को जनशून्य बना दिया गया। नारायणसिंह के परिवार के लोग, गोबिन्दसिंह की ससुराल के गांव वर्तमान उड़ीसा के पदमपुर, की तरफ निकल पड़े। अर्जुनी, चदेली डोंगरी होकर पूरे परिवार ने बिलाईगढ के जंगल का रास्ता पकडा। लामी डोंगरी, सलिहा, विजय नगर परसापानी फिर ठारघाट डोंगरी पार कर काठ खलोया डोंगरी, मझना- डोंगरो, बेलारी डोंगरी पार किया एव बसना की सड़क पकड़ी फिर और दो पहाड़ फाग डोंगरी और रग -मतिया डोंगरी होते हुए बाम्हन डोंगरी के पास गोरमर्रा के पास डेरा डाला। गोलमर्रा उस समय फुलझर जमींदारी में आता था। बिझवार जमींदार परिवार का दुख देख कर फुलझर जमींदार ने उन्हे गोरमर्रा में गुजर-बसर करने के लिए माफी जमीन के रुप में जीने खाने के लायक जमीन दी।

इसके बाद हमें मुच्चु और गजपालसिंह को लेकर गोर-मर्रा की ओर जाना था। सोना झरिया को पार कर बस्ती वालों से बिदा लेकर हम लोग क्रान्ति वीर नारायणसिंह के गांव सोना-खान से बिदा लिये।

चलते-चलते मैंने गजपालसिंह से प्रश्न किया 'सोनाखान में कब से सोना पाया जाता है?' गजपालसिंह उत्तर में बोले– यह भी तो बहुत दिन की बात है। अपनी वंशावली का एक कागज आपको गोरमर्रा में दिखाऊंगा जिसमें लिखा है कि सोनाखान गांव

का पुरातन नाम सिंघगढ़ था। सिंघगढ़ से सिंहखान एवं वर्तमान में सोनाखान बना। वंशावली पत्र में यह भी है कि बिझवार खानदान के दो राजपुत्र रोजगार की तलाश में देश भ्रमण करने निकले। पहले फुलझर उड़ीयान में रहे। उस समय रतनपुर के हैहय राजाओं की शान की बात सुनकर हैहय राज दरबार रतनपुर में गये। राजा बहादूर ने मुलाकात करने के बाद उन राजपुत्रों को नौकरी में रख लिया प्रशन ठाकुर फुलझर में रह गये। बिशाही ठाकुर रतनपुर के हैहय राजा के साथ ही रहे। यह १५४९ ईसवीं की घटना है। बिशाही ठाकुर एक कटार से तीन बाघ मारे थे। गढ़मला के युध्द में बहादुरी दिखाई थी जिससे खुश होकर हैहय राजा ने बिशाही ठाकुर को लवन इलाके में जागीर दी। बिशाही ठाकुर के बाद लुकार बरिहा, फिर सन्धिराय बरिहा, फिर धनऊ बरिहा एवं माधो बरिहा हुए। जब माधो बरिहा ने लोहे की जन्जीर को एक हाथ से तोड़ दिया तो हैहय राजा ने उन्हे एक तालुका दिया। उसके बाद १६६३ ईसवीं में इन्हें ८४ गांवों का दीवान बना दिया गया। फिर आते हैं – (६) बघन बरिहा (७) मुरारी बरिहा (८) सिधराय बरिहा (९) गजप्रताप बरिहा। ये सब ८४ गांवों के दीवान थे। इनको दीवान सम्बन्धीगढ़ के नाम से जाना जाता था।

फिर आये फत्तेसिंह (१०) फत्तेसिंह दीवान (११) चन्द्रसाय दीवान (१२) खद्रसाय दीवान (१३) दलसाय दीवान (१४) रामसाय दीवान रामसाय दीवान वीर नारायणसिंह के पिता थे। उन्होंने भी 'खैरखवाई' के लिए अंग्रेजों के साथ लड़ाई की थी।

"सबव खालत फिरंगी घर पाये तीन खून माफ पाये"

रातों रात सफर कर जब हम रायपुर पहुचे तो सुर्योदय की लालिमा पूर्व गगन में उदित हो रही थी। सूरज की किरण जय स्तम्भ चौक के उपर पडी। इसी जय स्तम्भ के पास ही नारायण सिंह का उबलता हुआ गरम खून गिरा था, देश की मुक्ति के लिये। आज यह जनपथ है, रोज लाखों लोग आना जाना करते हैं क्या ? ये सब लोग ! शहीद वीर नारायण सिंह के खून सिंचित कुर्बानी के रास्ते में चल रहे हैं।